पादरी एवं मुहल्ले ने उपयोग में लाया वर्षा जल

2007 में करीब 150 व्यक्ति रिलीफ लाने मानसी पादरी गए। जिसमें महिलाओं की संख्या अधिक थी। ग्राम विकास समिति के सारे लोग मौजूद थे। वहाँ कई लोगों को जोरों की प्यास लगी। बस उसी पादरी कैम्पस में पोलिथिन टांग दिया और दो बाल्टी वर्षा का पानी जमा किया। रह–रह कर वर्षा होती थी। थोड़ा समय लगा। पादरी के **प्रभारी श्री राजकुमार** जो पटना जिले के रहने वाले थे आश्चर्य चकित होकर पूछने लगे की तुम लोग क्या कर रहे हो ? तब इनलोगों ने बताया कि हमलोग सब दिन बरसात के समय वर्षा का ही पानी पीते हैं। चापाकल में आयरन है। हमलोग मेघ पाईन अभियान के आदमी हैं। वर्षा का पानी शुद्ध होता हे। गैस नहीं बनता है। खाना स्वादिष्ट बनता है। जलावन कम लगता है। बीमार नहीं हेाते हैं। तब 2 ग्लास पानी पादरी प्रभारी पीया और कहा यह ठीक कहते हो हम भी वर्षा का ही पानी जमा कर पीऐंगे। इतना ही नहीं पादरी कार्यालय के बगल एक पासवान (दलित) का टोला है जो 25 घरों का टोला है। अब सारी महिलाऐं बोलने लगी की वर्षा के पानी पीने से घेंघा होता है। तब वशिष्ट जी **मेघ पाईन अभियान के जलदूत** ने कहा कि मेरे गाँव के सारे लोग पीते हैं। घेंघा नहीं हुआ अगर आपलेागों को घेंघा हेागा तो हमारे गांव आइयेगा छुड़ा देंगे। तब **जलदूत रेखा देवी अड़हुलिया देवी चातर** आदि ने विस्तार से वर्षा के पानी के बारे में बताया। इतना ही नहीं पोलिथिन टांग कर खड़ा कर दिया। सारे तरीकों को बता दिया। रेखा देवी के अनुसार सारे पासवान टोली के लोग वर्षा का पानी आज तक उपयोग कर रहे हैं।